



12077CH08

सप्तमः पाठः

हल्दीघाटी

भारतभूमि शताब्दियों तक पराधीन रही, विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा दमन किये जाने पर भी भारतीयों की स्वतन्त्रता प्राप्ति की इच्छा सदैव बलवती रही। महाराणा प्रताप मुगल शासकों के साथ आजीवन संघर्ष करते रहे तथा अत्यधिक साधन-सम्पन्न न होने पर भी विशाल मुगल साम्राज्य से लोहा लेते रहे। राजस्थान में हल्दीघाटी नामक स्थान पर विशाल मुगल सेना को मुट्ठी भर महाराणा प्रताप के सैनिकों ने नाकों चने चबवाएः यह तथ्य इतिहास से परिपुष्ट है। हल्दीघाटी की लड़ाई को आधार बनाकर लेखकों ने अनेक रचनाएँ प्रस्तुत कर उन शहीदों को श्रद्धाञ्जलि दी। प्रतापविजय नामक इस खण्डकाव्य में लेखक श्रीईशदत्तशास्त्री हल्दीघाटी के प्रत्येक कण को उस संघर्ष का साक्षी मानते हुए सुन्दर मनोरम श्लोकों में इस ऐतिहासिक कथानक को उपनिबद्ध करते हैं। यह पाठ निश्चित ही आज के युवकों को प्रेरणा देगा तथा उनमें स्वाभिमान की भावना भरेगा।



स्वाधीनताऽर्यभुवि मूर्तिमती समाना
 राणाप्रताप-बलवीर्यविभासमाना।
 आटीकते समुपमा नहि यां सुशोचिः
 शाटीव सा जयति काचन हल्दिघाटी ॥1॥

प्राची यदा हसति हे प्रिय! मन्दमन्दं
 वायुर्यदा वहति नन्दनजं मरन्दम्।
 या प्रत्यहं किल तदा मतिमाननीयां
 शोभां दधात्युषसि काञ्चनकाञ्चनीयाम् ॥2॥

मा कातराः! स्पृशत मां प्रिय-पारतन्याः!
 अद्यापि यन्न विहिता जननी स्वतन्ना।
 यत्रेदमेव गदतीव ततिस्तरूणां
 शाखाकदम्ब-कृत-मर्मरमातनोति ॥3॥

वीराग्रणीरभय-युद्धकलाकलापः
 क्वाऽस्तेऽद्य हा! स तनयः सनयः प्रतापी।
 अत्रत्य-निर्जनवनेऽथ यदा कदाचिद्
 मातेव रोदिति सखे! कुररी नु काचित् ॥4॥

पुष्पं फलं तदनु गन्धवहः समीरः
 खद्योत-पंक्तिरमला च पिकालि-गीतिः।
 अद्यापि यत्र सरल-प्रकृति-प्रणीतं
 पञ्चोपचारमिव पूजनमस्ति मातुः ॥5॥

नीलेन पक्ष-निवहेन खमाहसन्तः
 चञ्चवा फलानि विमलानि समञ्चयन्तः।
 ‘श्रीराम’ नाम मधुरं मधुरं क्वणन्तः
 अद्यापि यत्र सुशुका विलसन्ति सन्तः ॥६॥

यत्र प्रताप-नृपतेः प्रकट-प्रतापा
 एकाऽपि हन्त! शतधाऽभवदस्त्र-धारा।
 युद्धेऽधिकोशमपि शत्रुवधे क्रमेण
 ज्योत्स्ना तमःसहचरी चपलेति चित्रम् ॥७॥

सैषा स्थली चकित-चेतकचड़क्रमाणां
 सैषा स्थली कुटिलकुन्तपराक्रमाणाम्।
 सैषा स्थली प्रियतमाऽप्यसुतोऽमराणां
 सैषा स्थली भयकरी नर-पामराणाम् ॥८॥

वीक्ष्य प्रभाहसित-चारु-पुरन्दराणां
 सङ्गं स नृत्यमपलं शिखिसुन्दराणाम्
 सम्भासते वरभुवः सुषमात्युदारः
 हर्षाङ्कितो हरितहीरक-कण्ठहारः ॥९॥

शब्दार्थः टिप्पण्यश्च

| | |
|---------------------|---|
| आर्यभुवि | - आर्याणां भूः आर्यभूः तस्यां, आर्यभूमि, आर्यवर्त। |
| मूर्तिमती | - मूर्ति + मतुप् स्त्री. प्र. ए. व., साक्षात्, साकार। |
| बलवीर्य-विभासमाना | - बलेन वीर्येण च विभासमाना, शक्ति-पराक्रम-शोभमाना, शक्ति और पराक्रम से चमकती हुई। |
| आटीकते | - आ + टीक्, लट्, प्र.पु.ए.व., वर्तते, दिखाई देती है। |
| समुपमां | - समाना उपमा यस्याः सा ताम्, जिसके समान उपमा किसी की हो। |
| सुशोधिः | - देवीष्यमान, चमकदार। |
| शाटी | - साड़ी। |
| काचन | - कोई (अव्यय)। |
| प्राची | - पूर्व दिशा। |
| नन्दनजं | - नन्दने जायते इति तत्, नन्दन वन में होने वाला। |
| मरन्दम् | - पुष्परसम् - पराग। |
| प्रत्यहं | - अहनि अहनि अव्ययीभाव समास, प्रतिदिन। |
| किल | - (अव्यय) निश्चय से। |
| उषसि | - उषस्, सप्तमी ए.व. प्रातःकाल। |
| मतिमाननीयां | - मत्या माननीयां तृ. तत्पु. बुद्धिसम्मतां, विद्वानों से सम्मानित। |
| काञ्चन-काञ्चनीयाम् | - काञ्चनम् इव कमनीयाम्, स्वर्णिम सोने की तरह चमकने वाली। |
| कातरा: | - भीताः डरपोक, कायरा। |
| प्रिय-पारतन्त्र्याः | - प्रियम् पारतन्त्र्यम् येषां ते पराधीनताप्रियाः, पराधीनता में रुचि रखने वाले। |
| विहिता | - वि + धा + व्त, कृता, की गई। |
| गदतीव | - गदति + इव, कथयति, बोल रही है। |
| ततिः | - समूहः, पंक्ति। |

| | |
|-----------------|--|
| मर्मरम् | - शुष्कपत्र-ध्वनिः, सूखे पत्तों की आवाज। |
| आतनोति | - विस्तारयति, फैलाती है। |
| वीराग्रणीः | - वीरेषु अग्रणीः, वीरों में श्रेष्ठ। |
| युद्धकलापः | - युद्धस्य कलायां कलापः, युद्धकला में निपुण। |
| क्व | - कुत्र, कहाँ। |
| आस्ते | - अस्ति, है। |
| तनयः | - पुत्रः, पुत्र। |
| सनयः | - नयेन सहितः सनयः, नीतिज्ञ। |
| अत्रत्य | - यहाँ के। |
| कुररी | - क्रौञ्च पक्षी। |
| गन्थवहः | - गन्थम् वहति, उपपद तत्पु., वायु। |
| खद्योत | - जुगनू। |
| अमला | - शुद्धा, शुद्ध। |
| पिकालिः | - पिकानाम् अलिः, ष. तत्पु., कोकिल-पंक्तिः, कोयल की पंक्ति। |
| पञ्चोपचारमिव | - पञ्चानाम् उपचाराणां समूहः, द्विगु स। |
| उपचारः | - सत्कारविधिः, सत्कार सामग्री। |
| पक्षनिवहेन | - पक्षाणां निवहेन, ष. तत्पु., पंखों का समूह। |
| खम् | - आकाशम्, आकाश को। |
| आहसन्तः | - ईषत् हसन्तः, तिरस्कृत करते हुए। |
| समञ्चयन्तः | - सम् + अञ्च + णिच् + शतृ, शोभयन्तः, चमकाते हुए। |
| क्वणन्तः | - क्वण् + शतृ, पु. प्र. ब. व., शब्दं कुर्वन्तः, शब्द करते हुए। |
| सुशुका: | - सुन्दराः कीरा;, सुन्दर तोते। |
| विलसन्ति | - शोभन्ते, सुशोभित होते हैं। |
| शतधा अस्त्रधारा | - सौ प्रकार के अस्त्र (तलवार) की धारा। |
| अधिकोशमपि | - कोशे इति, कोश (म्यान) में। |
| ज्योत्स्ना | - चन्द्रिका, चाँदनी। |

| | |
|----------------|--|
| सहचरी | - युगपद् अनुगामिनी, साथ चलने वाली। |
| चपलेति | - चपला इति, बिजली। |
| चड़क्रमाणाम् | - गति, घोड़े की टाप। |
| कुन्तः | - भाला। |
| चित्रम् | - विचित्रम्, आश्चर्य की बात। |
| कुटिलम् | - वक्रम्, टेढ़ा। |
| असुतः | - असुभ्यः इति असुतः, असु + तसिल्, प्राणों से बढ़करा। |
| अमराणां | - देवानाम्, देवताओं का। |
| पामराणाम् | - नीचानां, नीचों का। |
| वीक्ष्य | - वि + ईक्ष् + क्त्वा > ल्यप्, दृष्ट्वा, देखकरा। |
| पुरन्दराणां | - इन्द्राणां, श्रेष्ठ। |
| हसितम् | - उपहसितम्, उपहास करना। |
| नृत्यममलम् | - नृत्यम् + अमलम्, पवित्र नाच। |
| सम्भासते | - सम्यक् भासते, चमकती है। |
| वरभुवः | - वरा भूः वरभूः तस्याः, श्रेष्ठ भूमि का। |
| सुषमाऽत्युदारः | - सुषमया अत्युदारः इति सुषमात्युदारः। |
| हरितहीरकम् | - हरितं हीरकम्, कर्मधारय, हरा हीरा। |

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं ददत -

- (क) आर्यभुवि शाटीतः का विराजते?
- (ख) उषसि हल्दीघाटी कीदूशों शोभां दधाति?
- (ग) सनयः तनयः कः अस्ति?
- (घ) के नीलेन पक्षेण खम् आहसन्ति?
- (ङ) वरभुवः सुषमा कथं सम्भासते?

- (च) तमःसहचरी का कथिता?
 (छ) प्रतापनृपते: अस्त्रधारा कतिधा अभवत्?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

- (क) मूर्तिमती हल्दीघाटी कथम् आटीकते?
 (ख) कदा हल्दीघाटी मतिमाननीयां शोभां दधाति?
 (ग) पिकालिगीतिः किमिव मातुः पूजनं करोति?
 (घ) कथं क्वणन्तः सुशुकाः विलसन्ति?
 (ड) हल्दीघाटी केषां स्थली अस्ति?
 (च) वरभुवः अत्युदारा सुषमा कीदृशी भासते?
 (छ) प्रकृतिः केषां पञ्चपदार्थानामुपचारेण पूजनं करोति?

3. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) मूर्तिमती हल्दीघाटी जयति।
 (ख) या उषसि शोभां दधाति।
 (ग) तरूणां ततिः कदम्बकृतमर्मरम् आतनोति
 (घ) निर्जनवने कुररी मातेव रोदिति।
 (ड) मातुः पञ्चोपचारं पूजनं करोति।
 (च) अस्त्रधारा शतधा अभवत्।
 (छ) असुतः अपि प्रियतमा स्थली।

4. अधोलिखितपदेषु सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत-

- (क) स्वाधीनतार्यभुवि
 (ख) दधाति + उषसि
 (ग) ततिस्तरूणाम्
 (घ) निर्जनवने + अथ
 (ड) सुशुका विलसन्ति
 (च) तदनु

5. अधोलिखितपदेषु प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक् कुरुत-

- (क) ततिः
- (ख) भासमाना
- (ग) विहिता
- (घ) प्रतापी
- (ङ) हसन्तः
- (च) शिखी
- (छ) प्रणीतम्

6. अथः प्रदत्तं श्लोकं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत-

प्रत्यहम्, मन्दमन्दं, मरन्दं, वहति, शोभां, काञ्चन।

प्राची यदा हसति हे प्रिय

वायुर्यदा नन्दनजं.....।

या किल तदा मतिमाननीयां

.....दधात्युषसिकाञ्चनीयाम्॥

7. विशेषणानि विशेष्याणि च योजयित्वा पुनः लिखत-

| | |
|------------------|-------------------|
| <u>विशेषणानि</u> | <u>विशेष्याणि</u> |
|------------------|-------------------|

| | |
|-------------------|---------------|
| (क) सुशोचिः | तनयः |
| (ख) पारतन्त्र्याः | सुशुकाः |
| (ग) प्रतापी | शाटी |
| (घ) क्वणन्तः | अस्थधारा |
| (ङ) शतधा | कातराः |
| (च) नीलेन | खद्योतपंक्तिः |
| (छ) अमला | पक्षनिवहेन |

8. अधोलिखितानां पदानां व्याकरणानुसारं पदपरिचयः दीयताम्-

स्वाधीनता, माननीयाम्, सन्तः, तमः, सम्भासते, स्थली, माता

9. हल्दीघाटीयुद्धस्य ऐतिहासिकः परिचयः हिन्दी/आंग्ल/संस्कृतभाषया देयः।

10. महाराणाप्रतापस्य स्वातन्त्र्यसङ्घर्षं हिन्दी/आंग्ल/संस्कृतभाषया वर्णयत।

योग्यताविस्तारः

साहित्ये समाजः प्रतिबिम्बितः भवेति। कविः स्वपरिवेशेन एवाप्लावितो भवति। काव्यकर्म कर्तुं कविः कल्पनामाश्रयति, ऐतिहासिकं वा वृत्तं परिवर्त्य चित्रयति। भारतं पराधीनतायाः मोचयितुं समये समये नैके वीराः स्वप्राणोत्सर्गं विहितवन्तः। एतादृशेषु महाभटेषु राणासांगा, महाराणाप्रतापः, लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे इत्यादयोऽग्रगण्याः सन्ति। बहुधा समये समयेऽनेके काव्यकर्तरः एतादृशां सेनान्यां कथाः आश्रित्य काव्यविधाः प्रणीतवन्तः। संस्कृतवाङ्मये विद्यते एतद्विधानां रचनानां महती परम्परा। यस्यां शिवराजविजयम्, भारतविजयम् इत्यादयः प्रमुखाः सन्ति। एतेषु स्वतन्त्रताया प्रेप्सा, हुतात्मवीरान् प्रति च श्रद्धा ससम्मानं प्रदर्शिता।